POSTAL REG. NO. JAIPURCITY/410/2024-26 (RNI.REG.NO 39658/1983) #ग्रा.ग./2024/अंक 06

मासिक प्रेषण दि. 8 जून, सी.एस.ओ., आरएमएस गाँधी नगर, जयपुर-15

ग्राम गदर

वर्ष 1983 से प्रकाशित

'अक्षत टावर', डी-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016

प्रकाशन की तिथि : 01 जून, 2024 मूल्य 50 पैसे

आपके नाम चिट्ठी

जयपुर से जोग लिखी प्रदीप महता का सबको राम-राम/सलाम! विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। यह पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों में जागरूकता बढ़ाने और इसके संरक्षण के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस बार का विषय 'भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखा लचीलापन' है। इस आयोजन का नारा 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य' है।

हमारी भूमि सिर्फ मनुष्यों का ही नहीं, बल्कि करोड़ों जीव जंतुओं और वनस्पतियों का भी घर है। लेकिन हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पृथ्वी को कई तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसके चलते बाढ़, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग जैसी कई समस्याएं पैदा हो रही है। अभी भी अगर इन समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया तो हमारा भविष्य कई खतरों की वजह बन सकता है। हमें हमारी भूमि को हरी-भरी बनाना बेहद जरूरी है। विकास के साथ हमें इन खतरों से निपटने के लिए नई तकनीक भी खोजनी होंगी। भूमि को ज्यादा उपजाऊ बनाना होगा।

आज हमें पानी के सबसे बड़े संकट से गुजरना पड़ रहा है। देश में जलाशयों के जल भंडार में भारी गिरावट, आने वाले समय में गंभीर संकट का संकेत दे रही है। जल संपदा की रक्षा से ही सूखे का संकट दूर होगा। देश के 150 बड़े जलाशयों में भंडारण क्षमता का 28 फीसदी ही पानी रह गया है। भूमिगत जल भी बहुत नीचे जा रहा है।

जल सुरक्षा सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। भूजल को वापस रिचार्ज करने पर ज्यादा ध्यान देना होगा। हमारे लिए विश्व पर्यावरण दिवस की सार्थकता तभी सिद्ध हो सकेगी जब हम आने वाली नई पीढ़ी को भी सामूहिक रूप से तैयार करेंगे।

सरे बाजार प्रसव मानवता की मौत, मां को दे मुआवजा

हाईकोर्ट ने अलवर जिले के खेड़ली में अप्रैल 2016 के दौरान सरकारी स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा कर्मियों की कर्तव्यों के निर्वहन में विफलता के चलते सरे बाजार सड़क पर प्रसूता को जुड़वा बच्चों को जन्म के लिए मजबूर करने और बाद में इलाज नहीं मिलने से बच्चों की मौत होने को मानवता की मौत बताया है।

अदालत ने केंद्र व राज्य सरकार को निर्देश दिया है कि वह बच्चों की मां को चार लाख रुपए बतौर मुआवजा राशि और अन्य खर्च के 25 हजार रुपए भी दे। वहीं इस घटना के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाए। जस्टिस अनूप कुमार ढंड ने यह निर्देश भरतपुर के नदबई तहसील निवासी फूलमती की याचिका पर दिया।

अदालत ने गर्भवती व प्रसूताओं के लिए केंद्र व राज्य सरकार की कई योजनाएं होने के बावजूद उनका लाभ समय पर महिलाओं को नहीं मिलने को गंभीर माना और कहा कि भारत में संविधान का अनुच्छेद 21 राज्य पर मानव जीवन के संरक्षित करने का दायित्व डालता है। स्वास्थ्य का अधिकार गारंटीकृत जीवन का अधिकार है। अदालत ने योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केंद्र व राज्य सरकार को संयुक्त उच्च स्तरीय कमेटी बनाने का भी निर्देश दिया है। वहीं योजनाओं के क्रियान्वयन पर निगरानी भी रखने के लिए कहा है।

एसी के साथ फ्री टोस्टर नहीं दिया, अब देना होगा हर्जाना

जयपुर स्थित सिद्दार्थ नगर निवासी हेमंत यादव ने मैसर्स ग्रेट ईस्टर्न एप्लाइंसेज के खिलाफ जिला उपभोक्ता आयोग जयपुर-प्रथम में परिवाद दायर किया। उन्होंने परिवाद में कहा कि वे 13 मई 2017 को

ग्रेट ईस्टर्न एप्लाइंसेज के शोरूम पर एसी खरीदने गए। वहां उन्हें बताया गया कि एलजी के एसी के साथ फ्री स्कीम के तहत इलेक्ट्रॉनिक टोस्टर दिया जा रहा है। इस पर उन्होंने एलजी कंपनी का एसी खरीद लिया। जब उन्होंने फ्री टोस्टर मांगा तो विक्रेता ने कहा कि अभी वह स्टॉक में नहीं है। इसके बाद वह जब भी बिल लेकर विक्रेता के पास टोस्टर लेने के लिए गए, उन्हें स्टॉक में नहीं होने का हवाला देकर बाद में आने को कहा गया। कई चक्कर लगाने के बाद उन्हें साफ तौर पर इलेक्ट्रॉनिक टोस्टर देने से मना कर दिया गया।

मामले की सुनवाई पर उपभोक्ता आयोग ने ग्राहक को फ्री इलेक्ट्रॉनिक टोस्टर नहीं देने को सेवादोष माना। आयोग ने विक्रेता मैसर्स ग्रेट ईस्टर्न एप्लाइंसेज पर 15 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। साथ ही विक्रेता को निर्देश दिया है कि वह परिवादी हेमंत यादव को हर्जाने सहित फ्री में एक नया इलेक्ट्रॉनिक टोस्टर दें।

महिलाओं के हाथ में होगी तकनीक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि गांव की महिलाएं सिर्फ गाय-भैंस नहीं चराएंगी। वह उनके हाथ में तकनीक देना चाहते हैं। माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स के साथ एआई के बढ़ते उपयोग, जलवायु, स्वास्थ्य, शिक्षा व टैक्नोलॉजी समेत कई मुद्दों पर चर्चा के दौरान उन्होंने यह बात कही।

उन्होंने बताया कि सरकार बुनियादी ढांचे को गांवों तक ले जाएगी। सरकार का लक्ष्य गांव-गांव तक हर बच्चे तक डिजिटल शिक्षा पहुंचाना है। वह कृषि क्षेत्र को भी आधुनिक बनाना चाहते हैं। नमो ड्रोन दीदी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वह महिलाओं के लिए टेक्नोलॉजी में उनके अनुकूल चीजों को जोड़ना चाहते हैं। क्योंकि महिलाएं कामों में तेजी से जुट जाती है। इस पर गेट्स ने कहा भारत सिर्फ टेक्नोलॉजी ही नहीं अपना रहा बल्कि आगे भी बढ़ रहा है।

गांव के लोगों ने पेश की नजीर

राजसमंद जिले में घोड़ातलाई गांव के लोगों ने शहरों की ओर पलायन कर रहे परिवारों को रोक कर एक नई नजीर पेश की है। गांव में ज्यादातर भील समुदाय के लोग है, जिनकी आजीविका कृषि और पशुपालन पर निर्भर हैं।

कुछ सालों से बारिश नहीं होने से भूजल बहुत नीचे चला गया। कई परिवार पलायन करने लगे। इसे रोकने के लिए पंचायत ने ग्रामीणों के साथ बैठक की और वर्षा के जल को रोकने की मुहिम चलाई। पलायन कर रहे लोगों को शहर जितने वेतन पर काम देना शुरू किया।

उन्होंने पानी स्टोर करने के लिए स्ट्रक्चर बनाए। इसके लिए ग्रामीणों ने करीब चार लाख रुपए से ज्यादा का योगदान दिया। इससे पलायन रुकने के साथ ही गांव में ही रोजगार मिला और पानी की समस्या का भी समाधान हुआ। गांव में अब लोग वापस खेती व पशुपालन के काम में जुटे हैं।

दुनिया से ज्यादा भारत में असमानता

भारत में अब अमीरों और गरीबों के बीच असमानता का दौर तेजी से बढ़ा है। विश्व असमानता रिपोर्ट के मुताबिक 2022-23 में देश की सबसे अमीर एक प्रतिशत आबादी की आय में हिस्सेदारी बढ़कर 22.6 प्रतिशत हो गई है। वहीं संपत्ति में उनकी हिस्सेदारी बढ़कर 40.1 प्रतिशत हो गई है।

ऐसा सौ साल में पहली बार हुआ है। भारत में आमदनी और संपत्ति में असमानता, '1922 से 2023: अरबपति राज का उदय' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट के अनुसार असमानता की खाई 1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद बढ़ी है।

पिछले एक दशक में ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। देश

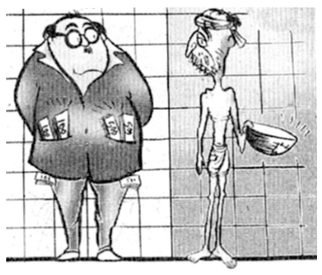

में एक फीसदी अमीरों के पास आय-संपत्ति में हिस्सेदारी दुनिया के प्रमुख देशों में सबसे अधिक है। वर्ष 2015 से 2023 में टॉप एक फीसदी अमीरों में संपत्ति का जमावड़ा बेहद ज्यादा हो गया है। रिपोर्ट में आय और संपत्ति पर टैक्स ढांचे को दुरुस्त करने की बात भी कही गई है।

आधार से लिंक होगी किसानों की जमीन

केंद्र सरकार के डिजिटल इंडिया भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण के तहत राज्य के करीब एक करोड़ किसानों की जमीनों को आधार नंबर से लिंक किया जाएगा। इसके लिए केंद्र सरकार ने राजस्थान के लिए 582.61 लाख रुपए का बजट मंजूर करते हुए 45.72 लाख रुपए जारी कर दिए हैं।

इसके लिए राजस्व विभाग ने प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को भेज दिया है। सूचना एवं संचार विभाग आधार से लिंक किए जाने की अनुमति देगा। इसके बाद ऑनलाइन जमाबंदी से जुड़े सॉफ्टवेयर में आधार लिंक किए जाने का प्रावधान किया जाएगा। जमाबंदी से आधार लिंक करने के लिए पटवारियों व ई-मित्र की सेवाएं ली जाएगी।

मनरेगा : संविदाकर्मी होंगे नियमित

मनरेगा में संविदा पर लगे कार्मिकों को नियमित करने की राज्य सरकार ने कवायद शुरू कर दी है। ग्रामीण विकास और पंचायती राज विभाग ने सभी जिला कलेक्टरों को इस बारे में निर्देश जारी किए हैं। फिलहाल 9 साल या इससे अधिक का कार्यानुभव रखने वाले संविदा कर्मियों को ही इसका लाभ मिलेगा।

प्रदेश में करीब 2000 कार्मिक ऐसे हैं जो इस दायरे में आ रहे हैं। जिनका अनुभव 9 साल से कम है उन्हें बाद में मौका मिलेगा। जिला स्तरीय कमेटी संविदा कर्मियों की पात्रता और दस्तावेजों का सत्यापन करेगी। संविदा कर्मियों को नियमित करने के लिए 9 साल से अधिक की सेवा अवधि की गणना एक अप्रैल 2024 को आधार मान कर की जाएगी।

गांव में महिलाएं संभालती हैं खेती

जैसलमेर जिले का मसूरड़ी गांव एक ऐसा गांव है जहां अपनी सूझ-बूझ और मेहनत के बूते कमाई के मामले में यहां की महिलाएं पुरुषों से आगे हैं। यह कमाल किया है 45 वर्ष की पेंपादेवी ने। वर्ष 2022 में उसने पहली बार खड़ीन पद्धति से खेती करने का

बीड़ा उठाया। इसके बाद कारवां जुड़ता चला गया। अब गांव में 70 परिवारों की महिलाएं इस पद्धति से जैविक खेती कर रही हैं। पेंपादेवी बताती है कि आज हमारा गेहूं 7 से 8 हजार रुपए क्विंटल बिक रहा है। पहले ही साल हम महिलाओं ने 15 फीसदी ज्यादा मुनाफा दिया। नींबू देवी ने बताया, हम खुद तय करती है कि किस जमीन में अब कौनसी फसल बोनी है। महिलाएं गेहूं बेचने खुद मंडी जाती है। हिसाब भी पूरा रखती है। अब वें खेती से कमाई के अलावा पशु पालती है और खुद की दुकानें भी संचालित करती है। हर महिला औसतन 30 से 35 हजार रुपए तक हर महीने कमा रही हैं। दूसरे गांवों में अब हमारे उदाहरण दिए जाते हैं।

कामगारों को देंगे योजनाओं का लाभ

असंगठित क्षेत्र में काम कर रहे कामगारों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ देने, उन्हें सशक्त बनाने और अवास, बीमा, पेंशन जैसी सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में मदद करने के लिए सरकार एक डेटाबेस तैयार कर रही है।

इसके लिए श्रम और रोजगार मंत्रालय कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों के डेटा को ई-श्रम पोर्टल के साथ मर्ज कर व्यापक डेटाबेस बना रही है। इससे ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत लगभग 30 करोड़ श्रमिकों को लाभ मिलेगा। ई-श्रम पोर्टल पर 29.5 करोड़ से अधिक श्रमिक रजिस्टर्ड हैं। इनमें करीब 15.43 करोड़ श्रमिक कृषि कार्यों से जुड़े हैं तथा 15.5 करोड़ के करीब श्रमिक कंस्ट्रक्शन के साथ निर्माण कार्यों से जुड़े हैं, जो ई-श्रम पोर्टल पर रजिस्टर्ड हैं।

प्रदेश के भूजल स्तर में हो रही गिरावट

प्रदेश में भूजल स्तर की लगातार गिरावट गंभीर चिंता का विषय है। राज्य के 17 जिलों के 8 ब्लॉक, 1132 ग्राम पंचायत में गिरते हुए भूजल स्तर की रोकथाम के लिए अटल भूजल योजना से काम होना है। लेकिन योजना के अभी तक सकारात्मक परिणाम नहीं आ रहे हैं।

प्रदेश में अटल भूजल योजना से कृषि विभाग, जल संसाधन विभाग, उद्यानिकी विभाग व जलदाय विभाग को आंकड़े नहीं मिल पा रहे हैं। ऐसे में कृषि व उद्यानिकी विभाग की योजनाओं की प्लानिंग भी नहीं हो पा रही है। अटल भूजल योजना व जन सहभागिता के माध्यम से गिरते भूजल स्तर की रोकथाम और इसके सकारात्मक परिणाम लाने की जरूरत है। योजना के तहत इस वित्तीय वर्ष एवं आगामी अवधि में प्रोत्साहन राशि का पूरा उपयोग कर स्थिति को बेहतर बनाए जाने के लिए काम करना होगा।

खतरनाक है प्लास्टिक का उपयोग

आज इंसान ने प्लास्टिक को अपने सुगम जीवन का साधन मान लिया है, जबकि प्लास्टिक का मानव स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। यह कई तरीकों से हमारे शरीर में पहुंचकर हमें कई गंभीर बीमारियों की ओर धकेलता है। इससे हृदय, फेफड़े, यकृत और गुर्दे तो प्रभावित होते ही हैं साथ ही यह हमारे विभिन्न अंगों में कैंसर की संभावना को भी प्रबल बनाता है।

साथ ही यह हमारे पर्यावरण को भी गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा रहा है। जिससे जलवायु परिवर्तन के कई विषम नतीजे हमें और कई जीव जंतुओं को भुगतने पड़ रहे हैं। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक बड़ी समस्या बन चुका है। इस वजह से इसके खिलाफ एक बहुस्तरीय और सामूहिक कार्रवाई की जरूरत है।

गरीबों का हक डकार रहे कर्मचारी

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में गरीबों का राशन डकार रहे 4,754 कर्मचारी पकड़े गए हैं। इन कर्मचारियों ने वर्ष 2018 से लेकर अब तक योजना का लाभ लिया था। प्रदेश सरकार ने जनाधार व आधार कार्ड से जांच की तो मामले का खुलासा हुआ।

पकड़े गए कर्मचारियों को योजना से बाहर कर इनके राशन कार्ड निरस्त कर दिए गए हैं। इनमें से ज्यादातर कर्मचारियों से वसूली भी हो चुकी है और कुछ से की जा रही है। प्रशासन ने सभी एसडीएम को वसूली की जिम्मेदारी दी है। पता चला है कि गई अपात्र लोग भी योजना का फायदा ले रहे हैं। उनके राशन कार्ड भी फर्जी मिले हैं।

घर-घर नल कनेक्शन में प्रदेश पिछड़ा

देश में जल जीवन मिशन को शुरू हुए चार साल से अधिक समय हो गया है लेकिन राजस्थान अभी भी घर-घर नल कनेक्शन देने में पिछड़ा हुआ है। मिशन के तहत किए गए सर्वे के अनुसार प्रदेश में 50 फीसदी काम भी पूरा नहीं हुआ है।

राजस्थान में अब तक केवल 48.71 प्रतिशत घरों को नल से जल का कनेक्शन मिला है। सर्वे के अनुसार प्रदेश में 1,06,99,260 घर नल कनेक्शन देने के लिए चिह्नित किए गए। लेकिन अभी तक नल कनेक्शन 52,11,771 घरों को ही मिले है।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वत्वाधिकारी प्रदीप एस महता के लिए भालोटिया प्रिन्टर्स, जयपुर से प्रकाशित।

'अक्षत टावर', डी-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016 फोनः 228 2821 से 23 फैक्सः 0141-228 2485

कम्पोजिंग एवं लेआउट राजकुमार त्रिवेदी, 'कट्स' जयपुर